Indian Journal of Educational Studies : An Interdisciplinary Journal
2015, Vol.2, No.1, ISSN No. 2349-6908

निरभर रोजगार योग्य एवं साक्षर अनियोज्य व्यक्तियों का शिक्षा एवं रोजगार में संयुक्त योगदान

(Joint Contribution of Illiterate Employable and Literate Unemployable in Education and Employment)

*डा. राजेन्द्र पाल**

वर्तमान समय में पढ़े लिखे लोगों के लिए भी रोजगार पाना एक बहुत बड़ी समस्या हो गई है। जिसे देखो वह बड़ी बड़ी डिग्रीयाँ लेकर एक संस्थान से दूसरे, दूसरे से तीसरे संस्थान में साक्षात्कार देता घूमता रहता है। जो कुछ रोजगार में लग भी जाते है उनका एक बहुत बड़ा हिस्सा अपने काम से संतुष्ठ नही रहता क्योंकि वे जिस व्यवसाय की तैयारी से जाते है वह उन्हे मिल नहीं पाता और अगर मिल भी जाता है तो उनकी अपेक्षा के अनूकूल नहीं रहता।

दूसरी तरफ बहुत से लोग बिना किसी व्यावसायिक डिग्री के या निरक्षर रहते हुए भी अपना रोजगार अच्छी तरह चला रहे हैं, और कई परिस्थितियों में पढ़े लिखे लोग उन अनपढ़ लोगों पर अपने आवश्यक कार्यों के लिए निर्भर होते है। यहाँ उन दैनिक कामों का जिक्र नहीं है जो आम आदमी व्यस्त होने के कारण दूसरे लोगों से करवाता है जैसे झाड़ू, पोछा, बर्तन कपड़े आदि। यहाँ उन कार्यो से आशय है, जो हमारे दैनिक जीवन में रूकावटें पैदा करते है जैसे प्लम्बर, कारपेन्टर, पेन्टर, इलेक्ट्रिशियन आदि द्वारा किए जाने वाले कार्य। यहाँ पर अनपढ़ या निरक्षर का मतलब अशिक्षित बिलकुल भी नहीं है वे पूर्णतः शिक्षित और कुशल कारीगर होते है।

यहाँ हमारे आम जीवन के कुछ क्षेत्रो की चर्चा संक्षेप में की गई हैं जो बताते है कि निरक्षर या गैर डिग्रीधारी व्यक्ति किस प्रकार डिग्रीधारी व्यक्तियों से अधिक रोजगार योग्य हैः

1. तकनीकि के क्षेत्र मेंः कार या स्कूटर अथवा अन्य कोई वाहन खराब हो जाने पर डिग्रीधारक आटोमोबाइल इंजीनियर भी अपना वाहन निरक्षर मैकेनिक के पास जाकर ठीक करवाता है तथा उसका सही कारण जानने की कोशिश करता है। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक

* प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग, एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली - 110016

इंजीनियर होने के बावजूद भी अपना टीवी/मोबाइल/कम्प्यूटर ठीक कराने के लिए गैर डिग्रीधारी व्यक्ति के पास ले जाता है।

2. प्रबंधन के क्षेत्र में: छोटे-छोटे दुकानदार से लेकर बड़े-बड़े व्यवसायी भी कई बार बगैर किसी डिग्री के अपने व्यवसाय का प्रबंधन बहुत अच्छी तरह से कर लेते है। शायद आपको याद हो कि लालू प्रशाद यादव जब रेल मंत्री थे तब वे मेनेजमेंट के छात्रों को प्रबंधन पर व्याख्यान दिया करते थे। उन्होने रेल मंत्रालय का प्रबंधन भी सुचारू रूप से किया था। उनकी साक्षरता के स्तर से तो सभी परिचित ही है।

3. उत्पादन/मार्केटिग के क्षेत्र में: आजकल त्योहारों के समय साज सज्जा की वस्तुऐं निरक्षर व्यक्तियों द्वारा बनाई व बेची जाती है। इन अनपढ़ लोगों को इस बात की पूरी समझ होती है कि बाजार में किस प्रकार की माँग है उसी तरह से वे समय से पहले तैयारियाँ कर वस्तुऐं तैयार करते है। फिर चाहे वह दीपावली हो, ईद हो क्रिसमस या गुरू पर्व। किसी खास मजहब या धर्म से उन्हे सरोकार नही होता।

4. भवन निर्माण के क्षेत्र में: भवन निर्माण में जितने डिग्रीधारी इंजीनियर काम कर रहे है उससे कहीं अधिक, गाँव व छोटे कस्बों के अनपढ़ लोग लगे हुए हैं ये लोग नक्शा क्सा बनाने से लेकर बाहरी व भीतरी डिजाइन तैयार करना प्लास्टर आफ पेरिस आदि का काम बड़ी सफाई से करते हे और इनकी गणनाएँ बडी सटीक बैठती हैं।

5. मौसम विज्ञान व खेती किसानी के क्षेत्र में: भारत कृषि प्रधान देश रहा है। वैज्ञानिकों के लिए मौसम के बारे मे आज इतनी वैज्ञानिक तकनीकी विकसित होने के बावजूद सटीक भविष्यवाणी करना संभव नहीं हो पाता है। लेकिन हमेशा से ही हमारे निरक्षर किसान मौसम का अनूमान विभिन्न स्रोतों से लगा लेते थे फिर चाहे वह बादलों की प्रकृति हो। गर्मी का ताप हो या पक्षियों का उड़ना/लौटना हो। इसी प्रकार किस मौसम में कौन-सी फसल पैदा होगी। किस फसल को कितना पानी चाहिये। कम पानी हो तो क्या उगाना चाहिये आदि। इसी प्रकार जैविक खेती हमारे यहाँ बहुत पहले से ही की जाती रही है। अनाज भण्डारण की वजह से आज जितना खराब होता है वह पहले कभी नहीं हुआ करता था। अभी भी उत्पादन का 1/3 भाग अनाज खराब/व्यर्थ चला जाता है।

6. चिकित्सा के क्षेत्र में: हमारी पारम्परिक चिकित्सा पद्धति कितनी विकसित है कि कई बार तो जब डाक्टर जवाब दे देते है तब भी लोग आयुर्वेद/होमियोपेथ/नेचरोपेथी आदि

चिकित्सा हेतु गैरडिग्रीधारक परन्तु जानकार लोगों के पास जाते है और बहुत बार ठीक भी होकर आ जाते है।

उपर वर्जित सभी प्रसंगों से यह पता चलता है कि बड़ी-बड़ी डिग्रीयाँ हासिल करने के बाद भी लोग रोजगार योग्य नहीं हो पाते। और कुछ लोग अनपढ़ या कम पढ़े लिखे होने के बावजूद रोजगार योग्य होते है।

इसका कारण प्रथम दृष्टया यही प्रतित होता है कि जिन लोगों में काम करने का कौशल विकसित होता है वे रोजगार करने योग्य होते है तथा जो लोग केवल शैद्धान्तिक पढ़ाई करके डिग्रीयाँ ले लेते है वे व्यवसाय करने योग्य नहीं हो पाते।

अगर संक्षेप में कहा जाए तो कह सकते है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति पढ़े लिखे बेरोजगार युवक पैदा कर रही है। उनमें अर्जित ज्ञान को व्यवहारिक स्तर पर उपयोग करने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती। यह एक बहुत बड़ी व जटिल समस्या है।

पारम्परिक व्यवसाय की समाज व्यवस्था:

पहले सामाजिक व्यवस्था में पारम्परिक व्यवसाय को सीखने के लिए कहीं जा कर पढ़ाई करने की आवश्यकता नहीं होती थी और पारम्परिक रोजगार जैसे बढ़ई, लोहार, सुनार आदि का कार्यघर पर ही पेंत्रक व्यवसाय होने की वजह से सीखे जा सकते थे ऐसे व्यवसायों को खत्म किया गया। बच्चों को ताने दिए जाते थे कि क्या तुम भी अपने पिता कि तरह सुनारी/लोहारी का काम करोगे। क्योंकि इन कामों को समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। इनके बदले वे पढ़कर रोजगार के लायक भी नही रह गए। इसी का दूसरा पहलू यह है कि आज भी डाक्टर अपने बच्चे को डाक्टर व इन्जीनियर अपने बच्चे को इंजीनियर बनाना चाहता है। केवल व्यवसाय में भिन्नता है सोच वही है।

दैनिक जीवन में गणितीय कौशल

प्रायः यह देखने में आया है कि साप्ताहिक हाट-बाजार अथवा विभिन्न अवसरों पर लगने वाले मेले में जो स्कूली बच्चे अपने माता पिता के साथ दुकान पर बैठते है वे खरीदने-बेचने वाले सभी गणीतिय सवाल बड़ी आसानी से कर लेते है। खरीददार द्वारा विभिन्न दरों पर भिन्न-भिन्न मात्रा में लिए गए सामान के पैसे जोड़कर हिसाब कर लेते है वहीं यह बच्चे कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए गए गणितिय सवालों को उतनी आसानी से नहीं कर पाते है परन्तु अन्य बच्चों कि तुलना में बहुत सफल होते है। इसका सीधा सा निष्कर्ष निकाला जा सकता है

कि हमारी शिक्षण-अधिगम व्यवस्था में कौशल विकास पर ध्यान नहीं दिया जाता परीक्षा में येन केन प्रकारेण अंक लाना ही ध्येय रह गया है।

पढे लिखे होना एक समस्या

प्रायः यह देखा गया है कि पढ़ लिख कर कौशलयुक्त काम करना आज कल के नौजवान अपनी शान के खिलाफ समझते है। जैसे मैकेनिकल इंजिनीयर अपनी गाड़ी ठीक करने में अपने आपको गौरान्वित महसूस नहीं करता इसी तरह इलेक्ट्रानिक इंजीनियर अपना कम्प्यूटर या टी.वी. ठीक करने में शर्म महसूस करता है और इस तरह वह व्यवहारिक ज्ञान से दूर होता जाता है। नौकरी न मिलने पर कृषि विज्ञान की पढ़ाई के बाद पैत्रक व्यवसाय जैसे खेती आदि करना तो बहुत दूर की बात है कभी-कभी तो पढ़े-लिखे लड़के-लड़कियॉ अपने अनपढ माता-पिता को भी साथियों से मिलवाने में झिझक महसूस करते हैं।

समस्या का निवारण:

इस बड़ी समस्या के निवारण हेतु हमें निरक्षर किंतु कौशलयुक्त तथा साक्षर अनियोज्य युवकों का आपस में सामन्जस्य बैठाना पड़ेगा। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कह सकते है कि कुशल निरक्षर लोगों तथा साक्षर अकुशल लोगों का युग्म बनाना होगा, ताकि पढ़े लिखे लोग अनपढ़ लोगों को शैद्धान्तिक बातें बता सकें तथा या गैर डिग्रिधारी लोग पढ़े लिखे लोगों को कुशल बना सकें। इस प्रकार दोनों के संयुक्त योगदान से रोजगार व शिक्षा में सुधार लाया जा सके।

शिक्षा में कुशल निरक्षर लोगों का योगदान कार्यक्रम

विद्यालयी पाद्यक्रम में विभिन्न विषयों के अन्तगत छात्रों को शैद्धान्तिक पढ़ाई के साथ-साथ कुशल कारीगरों के काम से अवगत कराया जाना चाहिये। इसके लिए दो तरह की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है:

कुशल कारीगरों का स्कूल में आकर प्रदर्शन करना:

इसमें कौशल जानने वाले कारीगरों को प्रसंगानुसार विद्यालय में बुलाकर विभिन्न विषयों पर प्रदर्शन कराया जा सकता है एवं छात्र शिद्धान्त के साथ-साथ वास्तविक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

छात्रों को कार्यशलाओंमे ले जाना:

कई बार प्रसंग पढ़ाने के समय कुशल कारीगरों को विद्यालय में लाना संभव नहीं हो पाता

है ऐसी अवास्था में छात्रों को कार्यशालापर ले जाकर कार्य कोवास्तविक स्थल पर होते हुए दिखाया जा सकता है। इस प्रकार कार्यस्थल पर जाकर छात्र प्रयोग को स्वयं भी करके देख सकते है अर्थात् छात्र शैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक रूप में कार्य करके उन्हे समझ सकते है। जो उन्हे जिन्दगीभर याद रह जाता है। उदाहरण के लिए - बढ़ई के काम, बिजली के काम, प्लम्बर के काम, बागवानी, कुम्हार के द्वारा किए जाने वाले काम, पेन्टर, म्यूजिक, आर्ट फार्मस, आदि में बच्चे अधिक रूचि लेते है।

कुशल निरक्षर लोगों का अकुशल साक्षक लोगों के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय कार्यक्रम की आवश्यकता:

बड़े पैमाने पर निरक्षर और साक्षर लोगों के बीच सामन्जस्य बिठाकर उनके योगदान द्वारा सफल रोजगार निर्माण की आवश्यकता है। बड़ी-बड़ी प्रबंधन की डिग्रियाँ लेने वाले लोगों को कुशल व्यवसायियों से युक्तियों/टिप्स लेने पर बहुत मदद मिल सकती है।

इस प्रकार कानून की डिग्रि हासिल करने वाले कई नए युवको कों उन लोगों से टिप्स मिल जाए जो लोग बिना किसी डिग्री के कानूनविदों के साथ सहायक की भूमिका में कार्य करते है तो कितना सहायक होगा।